



**NEW INDIA
EDUCATION (NIEd)**

— संकल्प आपका, साथ हमारा —

★ **RAS MAINS EXAM** ★

PAPER 01 | UNIT 02

**Part A
Indian Economy**

**Part B
World Economy**

अर्थव्यवस्था

INDIAN & WORLD ECONOMY

- आर्थिक विकास एवं मापन
- कृषि: विकास, सुधार एवं नीतियाँ
- उद्योग: नीति, LPG सुधार, MSME
- सेवा क्षेत्र एवं आधारभूत संरचना
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं भुगतान संतुलन
- सार्वजनिक वित्त, बजट एवं राजकोषीय नीति
- RBI एवं मौद्रिक प्रबंधन + बैंकिंग सुधार
- सामाजिक क्षेत्र: स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी, रोज़गार
- विश्व अर्थव्यवस्था: WTO, World Bank, IMF



By
OMKAR SIR



सरल भाषा में
सम्पूर्ण कवरेज



परीक्षा की दृष्टि से
महत्वपूर्ण विदु



चार्ट, ग्राफ, तालिका
और उदाहरण सहित



समय की बचत,
बेहतर तैयारी की गारंटी



RAS Mains के लिए
विशेष रूप से उपयोगी



सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था
अध्याय 1 से 9 — हिंदी स्वाध्याय नोट्स

www.omkarsir.com

आर्थिक विकास एवं मापन

भारतीय अर्थव्यवस्था | विकास, मापन एवं सतत विकास

कहानी से शुरुआत

कहानी 1 — दो गाँव, एक सवाल

रेगिस्तान के किनारे दो पड़ोसी गाँव थे — **रामपुरा** और **सुखपुरा** (दोनों काल्पनिक)। दोनों की हालत लगभग एक जैसी थी: कच्चे घर, बारिश पर टिकी बाजरे की खेती, और गर्मियों में पानी के लिए कोसों का सफ़र। फिर एक दिन दोनों गाँवों के सामने अलग-अलग रास्ते खुले।

रामपुरा में एक बड़ी फ़ैक्ट्री लगी। रातों-रात चहल-पहल बढ़ गई — सड़क बनी, ढाबे खुले, ज़मीन के दाम आसमान छूने लगे, घर-घर मोटरसाइकिल आ गई। दस साल में गाँव की **औसत आय दोगुनी** हो गई। अखबारों ने लिखा — "रामपुरा ने कमाल कर दिया!"

पर कहानी का दूसरा पहलू धीरे-धीरे सामने आया। फ़ैक्ट्री का गंदा पानी ज़मीन में रिसने लगा और कुएँ का पानी कड़वा हो गया। बच्चों को खाँसी रहने लगी, बुज़ुर्ग जल्दी बीमार पड़ने लगे। अच्छी नौकरियाँ बाहर से आए लोगों को मिलीं; गाँव के लड़कों को दिहाड़ी मिली और कई लड़कियों की पढ़ाई छुड़वाकर उन्हें काम पर लगा दिया गया। मुनाफ़ा फ़ैक्ट्री मालिक के खाते में गया, और गाँव में अमीर-गरीब की खाई और चौड़ी हो गई।

उधर सुखपुरा में कोई फ़ैक्ट्री नहीं आई। वहाँ की पंचायत ने छोटे-छोटे काम किए — बारिश का पानी रोकने के लिए **जोहड़ (तालाब)** बनवाया, स्कूल में शिक्षक और लड़कियों के लिए शौचालय का इंतज़ाम किया, गाँव में एक छोटा स्वास्थ्य केंद्र खुलवाया, और महिलाओं ने मिलकर स्वयं सहायता समूह बनाकर दूध और हस्तशिल्प का काम शुरू किया। सुखपुरा की आय बढ़ी, पर धीमे-धीमे — दस साल में सिर्फ़ डेढ़ गुनी।

दस साल बाद दोनों गाँवों का हिसाब लगाया गया। **कमाई के पैमाने** पर रामपुरा आगे था। पर **ज़िंदगी के पैमाने** पर तस्वीर उलटी थी — सुखपुरा में बच्चे ज़्यादा पढ़े-लिखे थे, बीमारी कम थी, लोग ज़्यादा उम्र तक जी रहे थे, कुओं में मीठा पानी था, और गाँव छोड़कर शहर जाने वाले कम थे।

अब आप ही बताइए — **कौन-सा गाँव सचमुच "विकसित" हुआ?** जिसकी जेब भारी हुई, या जिसकी ज़िंदगी बेहतर हुई? यही वह फ़र्क है जिसे अर्थशास्त्र **आर्थिक वृद्धि (Economic Growth)** और **आर्थिक विकास (Economic Development)** कहकर समझाता है। रामपुरा में "वृद्धि" हुई, सुखपुरा में "विकास" — और जो वृद्धि अपने ही पानी-हवा को नष्ट कर दे, वह टिकाऊ भी नहीं रहती।

♦ ♦ ♦

कहानी 2 — भड़ला की धूप : तीन पीढ़ियाँ, तीन पैमाने

जोधपुर से आगे, थार के बीच बसे एक गाँव में **भँवरलाल जी** रहते हैं। उनका बचपन आज़ादी के बाद के उन दिनों में बीता जब देश बहुत गरीब था। वे बताते हैं कि उनके दादा कहा करते थे — अंग्रेज़ों के ज़माने में **दादाभाई नौरोजी** ने हिसाब लगाया था कि एक हिंदुस्तानी साल भर में औसतन सिर्फ़ **लगभग 20 रुपये** कमाता है। भँवरलाल जी की पूरी जवानी बादलों की ओर देखते बीती — बारिश हुई तो बाजरा, नहीं हुई तो अकाल। अस्सी के दशक के भयंकर सूखे में उन्होंने अपने पशु मरते देखे।

उनके बेटे **मांगीलाल** ने रास्ता बदला। 1991 के बाद जब देश की अर्थव्यवस्था के दरवाज़े खुले, तो वे गुजरात की एक कपड़ा मिल में काम करने चले गए और हर महीने घर पैसे भेजने लगे। घर में पक्की छत आई, टीवी आया, कर्ज़ उतरा। मांगीलाल की यह कमाई देश की **जीडीपी** में गिनी गई। पर एक मज़ेदार बात — उनकी पत्नी **कमला देवी** सुबह चार बजे से रात तक पानी ढोती, खाना बनाती, पशु सँभालती, बच्चों को पालती रहीं; उनका यह सारा काम **जीडीपी में कहीं नहीं गिना गया**, क्योंकि उसके बदले कोई पैसा नहीं मिलता था।

फिर आई तीसरी पीढ़ी — मांगीलाल की बेटी **कविता**। उसने सरकारी स्कूल में पढ़ाई की, छात्रवृत्ति से आईटीआई (ITI) का कोर्स किया और आज वह पास के **भड़ला सोलर पार्क** में तकनीशियन है — जो दुनिया के सबसे बड़े सौर पार्कों में गिना जाता है। जिस तपती धूप को उसके दादा अभिशाप मानते थे, उसी धूप से आज बिजली बन रही है, और वह बिजली कोयला जलाए बिना देश के शहरों को रोशन कर रही है।

एक शाम आँगन में बैठे भँवरलाल जी ने पोती से पूछ लिया — "बेटी, कमाई तो हमारी बढ़ी है, पर क्या सच में हम आगे बढ़े?" कविता मुस्कराई और उँगलियों पर गिनाने लगी — "दादाजी, इसे तीन तराजू पर तौलना पड़ेगा। **पहला तराजू — कमाई:** बापू की तनख़्वाह और मेरी नौकरी ने घर की आय बढ़ाई। **दूसरा तराजू — ज़िंदगी:** मैं पढ़ी-लिखी हूँ, गाँव में अस्पताल है, आप बीमारी में भी

ठीक हो जाते हैं। **तीसरा तराजू — आने वाला कल:** हम ऐसी बिजली बना रहे हैं जिससे हवा खराब नहीं होती, ताकि मेरे बच्चों को भी साफ़ हवा और पानी मिले।"

कविता के ये तीन तराजू ही इस अध्याय की तीन बड़ी धाराएँ हैं — **कमाई** को मापती है **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)**, **ज़िंदगी** को परखता है **मानव विकास सूचकांक (HDI)** और **दूसरे सूचकांक**, और **आने वाले कल** की चिंता करता है **सतत विकास (Sustainable Development)**।

🎯 **इस अध्याय में हम इन्हीं दोनों कहानियों के जवाब ढूँढ़ेंगे** — देश की कमाई कैसे गिनी जाती है और उसमें क्या छूट जाता है; असली "विकास" किन पैमानों से परखा जाता है; विकास के बड़े सिद्धांत क्या कहते हैं; और भारत तथा राजस्थान धूप, हवा और पानी को बचाते हुए आगे बढ़ने के लिए क्या कर रहे हैं।

📋 **विषय-सूची (Index) — इस अध्याय में क्या पढ़ेंगे?**

- | | |
|---|--|
| 1. आर्थिक वृद्धि (Economic Growth) | 13. सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals) |
| 2. आर्थिक विकास (Economic Development) | 14. हरित अर्थव्यवस्था व कार्बन बाज़ार (Green Economy & Carbon Markets) |
| 3. वृद्धि बनाम विकास (Growth vs Development) | 15. भारत की जलवायु नीति (India's Climate Policy) |
| 4. विकास के प्रमुख सिद्धांत (Theories of Development) | 16. पर्यावरण शासन व वैश्विक सूचकांक (Environmental Governance) |
| 5. सकल घरेलू उत्पाद — मापन (GDP — Measurement) | 17. भारत से जुड़ाव (Linkages with India) |
| 6. नॉमिनल-वास्तविक जीडीपी व क्रय शक्ति समता (Nominal vs Real GDP & PPP) | 18. संतुलित मूल्यांकन (Balanced Assessment) |
| 7. राष्ट्रीय आय के माप (National Income Aggregates) | 19. राजस्थान से जुड़ाव (Rajasthan Linkages) |
| 8. जीडीपी का नया आधार वर्ष (New GDP Base Year 2022-23) | 20. प्रमुख व्यक्तित्व (Key Personalities) |
| 9. मानव विकास सूचकांक (Human Development Index) | 21. विस्तृत कालक्रम (Detailed Timeline) |
| 10. अन्य विकास सूचकांक (Other Development Indices) | 22. शब्दकोश — ज़रूरी शब्द (Glossary) |
| 11. पर्यावरण कुज़नेट्स वक्र (Environmental Kuznets Curve) | 23. अध्याय एक नज़र में (Chapter at a Glance) |
| 12. सतत विकास (Sustainable Development) | |

1. आर्थिक वृद्धि (Economic Growth) — अर्थ, विशेषताएँ एवं निर्धारक

किसी देश की अर्थव्यवस्था की प्रगति को समझने की पहली सीढ़ी है — "आर्थिक वृद्धि"। यह बताती है कि देश का कुल उत्पादन (वस्तुएँ + सेवाएँ) पिछले वर्ष की तुलना में कितना बढ़ा। "वृद्धि बनाम विकास" अर्थशास्त्र की सबसे बुनियादी अवधारणाओं में से एक है।

📘 **आसान परिभाषा: आर्थिक वृद्धि (Economic Growth)**

📖 **परिभाषा:** किसी निश्चित समयावधि (सामान्यतः 1 वर्ष, दीर्घकाल में सतत रूप से) में किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन (Real Output) में होने वाली मात्रात्मक वृद्धि को आर्थिक वृद्धि कहते हैं। इसे मुख्यतः **वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (Real GDP)** या **वास्तविक प्रति व्यक्ति आय** में प्रतिशत वृद्धि से मापा जाता है। यह एक संकीर्ण एवं वस्तुनिष्ठ अवधारणा है जो अर्थव्यवस्था के आकार व उत्पादन-क्षमता के विस्तार को दर्शाती है।

✅ **आसान भाषा में:** देश की "कुल कमाई का आकार" कितना बढ़ा — बस इतना बताती है आर्थिक वृद्धि। यह नहीं बताती कि यह कमाई किसके पास गई या किसका जीवन बेहतर हुआ। 🏠 **उदाहरण:** अगर भारत की वास्तविक जीडीपी पिछले वर्ष से 7.7% बढ़ी हो गई (नई श्रृंखला, वित्त वर्ष 2025-26 का अंतिम अनुमान), तो भारत की आर्थिक वृद्धि दर 7.7% कहलाएगी — भले ही यह वृद्धि केवल कुछ बड़ी कंपनियों के मुनाफे से क्यों न आई हो।

आर्थिक वृद्धि की प्रमुख विशेषताएँ

- ◆ **मात्रात्मक (Quantitative) अवधारणा** — इसे संख्या और प्रतिशत में मापा जाता है (GDP, GNP, प्रति व्यक्ति आय)।
- ◆ **संकीर्ण (Narrow) अवधारणा** — केवल उत्पादन के आकार पर केंद्रित; आय का वितरण (Distribution) इसमें नहीं दिखता।
- ◆ **स्वतः (Automatically) भी संभव** — जैसे किसी क्षेत्र में तेल का भंडार मिल जाना, बिना किसी सचेत सरकारी नीति के भी जीडीपी बढ़ा सकता है।
- ◆ **अल्पकालिक भी हो सकती है** — किसी एक अच्छे मानसून या वस्तुओं की ऊँची कीमतों से भी एक वर्ष की वृद्धि दर उछल सकती है।
- ◆ **आर्थिक वृद्धि, आर्थिक विकास की आवश्यक शर्त (Necessary Condition) है, परंतु पर्याप्त शर्त (Sufficient Condition) नहीं** (विस्तार भाग 3 में)।

आर्थिक वृद्धि के निर्धारक (Determinants of Growth)

निर्धारक	क्या शामिल है	वृद्धि पर प्रभाव कैसे पड़ता है
(क) प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources)	भूमि, खनिज, जल, वन, ऊर्जा-स्रोत	उत्पादन का कच्चा आधार देते हैं; पर केवल संसाधन होना पर्याप्त नहीं — उनका कुशल उपयोग जरूरी (जापान जैसे संसाधन-विहीन देश भी आगे बढ़े)।
(ख) भौतिक पूँजी निर्माण (Physical Capital Formation)	मशीनें, फैक्ट्रियाँ, परिवहन, ऊर्जा व आधारभूत संरचना में निवेश	उत्पादन-क्षमता को सीधे बढ़ाता है; ऊँची निवेश दर से श्रम उत्पादकता बढ़ती है, उत्पादन लागत घटती है तथा उद्योग व सेवा क्षेत्र का विस्तार होता है।
(ग) मानव पूँजी (Human Capital)	शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, कौशल विकास	कार्यबल की दक्षता और गुणवत्ता बढ़ाती है; कुशल श्रम नई तकनीक को तेज़ी से अपनाता है।
(घ) तकनीकी प्रगति (Technological Progress)	नई उत्पादन विधियाँ, नवाचार, अनुसंधान एवं विकास (R&D)	सीमित संसाधनों का अधिकतम उपयोग संभव बनाकर कुल कारक उत्पादकता (Total Factor Productivity — TFP) बढ़ाती है, जिससे उत्पादन में तीव्र वृद्धि होती है।
(ङ) राजनैतिक स्थिरता एवं संस्थागत ढाँचा	कानून का शासन, संपत्ति अधिकार, सुशासन, वित्तीय संस्थाएँ	निवेशकों में भरोसा पैदा करते हैं; अस्थिरता व भ्रष्टाचार निवेश और वृद्धि दोनों को रोकते हैं।
(च) उद्यमशीलता एवं बाज़ार का आकार	उद्यमी, पूँजी बाज़ार, घरेलू व विदेशी माँग	नए उद्योग व रोजगार पैदा करते हैं; बड़ा बाज़ार बड़े पैमाने के उत्पादन (Economies of Scale) को संभव बनाता है।

🔍 **तालिका से क्या समझें:** छह निर्धारकों को दो समूहों में देखें। पहले चार — प्राकृतिक संसाधन, भौतिक पूँजी, मानव पूँजी और तकनीक — उत्पादन की "क्षमता" बढ़ाते हैं। अंतिम दो — राजनीतिक-संस्थागत ढाँचा और उद्यमशीलता-बाज़ार — वह माहौल बनाते हैं जिसमें यह क्षमता सचमुच उपयोग हो पाए। इसीलिए संसाधन-संपन्न पर अस्थिर देश पीछे रह जाते हैं, जबकि जापान या सिंगापुर जैसे संसाधन-विहीन देश मानव पूँजी व संस्थाओं के बल पर आगे निकल गए।

📊 आसान परिभाषा: कुल कारक उत्पादकता (Total Factor Productivity — TFP)

📖 **परिभाषा:** उत्पादन में होने वाली वह वृद्धि जो श्रम और पूँजी जैसे आगतों (Inputs) की मात्रा बढ़ाने से नहीं, बल्कि उनके अधिक कुशल उपयोग — बेहतर तकनीक, प्रबंधन, नवाचार व संस्थाओं — से आती है, कुल कारक उत्पादकता कहलाती है।

✅ **आसान भाषा में:** उतने ही मज़दूर और उतनी ही मशीनें — फिर भी ज़्यादा उत्पादन; यह "अतिरिक्त" उत्पादन ही टीएफपी है। यह "मेहनत बढ़ाए बिना समझदारी से काम" का माप है। 🏠 **उदाहरण:** एक किसान पहले की तरह ही उतनी ज़मीन, उतना पानी और उतने मज़दूर लगाता है, पर उन्नत बीज और ड्रिप सिंचाई अपनाकर पैदावार 30% बढ़ा लेता है — यह बढ़ोतरी टीएफपी में सुधार का परिणाम है।

आर्थिक वृद्धि दर कैसे निकालें?

📊 वृद्धि दर का सूत्र

$$\text{वृद्धि दर (\%)} = (\text{इस वर्ष का वास्तविक जीडीपी} - \text{पिछले वर्ष का वास्तविक जीडीपी}) \div \text{पिछले वर्ष का वास्तविक जीडीपी} \times 100$$

उदाहरण: 2024-25 में ₹300.0 लाख करोड़, 2025-26 में ₹323.12 लाख करोड़ $\Rightarrow (23.12 \div 300.0) \times 100 \approx 7.7\%$

 **सूत्र से क्या समझें:** वृद्धि दर हमेशा "वास्तविक" (स्थिर मूल्य वाले) जीडीपी से निकाली जाती है, ताकि केवल कीमतों बढ़ने से वृद्धि का भ्रम न हो। साथ ही यह पिछले वर्ष की तुलना में बदलाव है — इसलिए यदि पिछला वर्ष बहुत खराब रहा हो (जैसे कोविड का 2020-21), तो अगले वर्ष की वृद्धि दर असामान्य रूप से ऊँची दिखती है; इसे "आधार प्रभाव" (Base Effect) कहते हैं।

याद रखें — इस खंड के मुख्य बिंदु

1. **आर्थिक वृद्धि** = वास्तविक जीडीपी या प्रति व्यक्ति आय में मात्रात्मक बढ़ोतरी — यह **एक-आयामी** और आसानी से मापने योग्य है।
2. वृद्धि दर हमेशा **वास्तविक (स्थिर मूल्य)** जीडीपी से निकाली जाती है।
3. **निर्धारक** — प्राकृतिक संसाधन, भौतिक पूँजी, **मानव पूँजी**, तकनीक, संस्थाएँ और उद्यमशीलता।

2. आर्थिक विकास (Economic Development) — अर्थ, विशेषताएँ एवं विचारकों के मत

आसान परिभाषा: आर्थिक विकास (Economic Development)

 **परिभाषा:** आर्थिक विकास एक **बहुआयामी व व्यापक (Broad)** अवधारणा है, जिसमें आय वृद्धि के साथ-साथ लोगों के जीवन-स्तर, स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, समानता, रोजगार, लैंगिक समानता तथा सामाजिक-संस्थागत ढाँचे में सकारात्मक सुधार शामिल होता है। इसमें **संरचनात्मक परिवर्तन (Structural Change)** — कृषि से उद्योग व सेवा की ओर श्रम का स्थानांतरण — अनिवार्य माना जाता है।

 **आसान भाषा में:** सिर्फ घर की कमाई बढ़ना काफी नहीं — घर के हर सदस्य की सेहत, पढ़ाई, खुशहाली और बराबरी का हक भी सुधरना चाहिए, तभी वह असली "विकास" कहलाएगा।  **उदाहरण:** अगर किसी राज्य की जीडीपी बढ़े और साथ ही स्कूलों में नामांकन बढ़े, अस्पताल सुधरे, गरीबी घटे और महिलाओं की भागीदारी बढ़े — तभी उसे सच्चा आर्थिक विकास कहा जाएगा।

आर्थिक विकास की प्रमुख विशेषताएँ

- ◆ **गुणात्मक + मात्रात्मक** — दोनों प्रकार की अवधारणा; इसे एचडीआई, एमपीआई, जीआईआई जैसे **बहुआयामी सूचकांकों** से मापा जाता है।
- ◆ **न्यायसंगत वितरण (Equitable Distribution)** अनिवार्य — जीवन प्रत्याशा, साक्षरता, स्वास्थ्य में सुधार व गरीबी-असमानता में कमी।
- ◆ **दीर्घकालिक (Long-term) व सचेत प्रक्रिया** — यह अपने आप नहीं होती; सुविचारित नीति, योजना और संस्थागत सुधार आवश्यक हैं।
- ◆ **संस्थागत, सामाजिक और तकनीकी संरचना में सकारात्मक बदलाव** — जैसे भूमि सुधार, वित्तीय समावेशन, महिला सशक्तिकरण।

विकास की परिभाषा — प्रमुख अर्थशास्त्रियों के मत

अर्थशास्त्री	विकास की परिभाषा / मुख्य विचार
आर्थर लुईस (Arthur Lewis)	विकास = प्रति व्यक्ति उत्पादन (Output per head) में वृद्धि; द्वि-क्षेत्र मॉडल (1954) के प्रणेता, नोबेल पुरस्कार (1979)।

अर्थशास्त्री	विकास की परिभाषा / मुख्य विचार
अमर्त्य सेन (Amartya Sen)	विकास = स्वतंत्रता का विस्तार — पुस्तक "स्वतंत्रता के रूप में विकास" (Development as Freedom, 1999); अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार (1998)। इनका क्षमता उपागम (Capability Approach) कहता है कि विकास का उद्देश्य लोगों की वास्तविक स्वतंत्रताओं और क्षमताओं का विस्तार है।
महबूब उल हक (Mahbub ul Haq)	विकास = लोगों के विकल्पों (Choices) का विस्तार — तीन अनिवार्य विकल्प: दीर्घ व स्वस्थ जीवन, ज्ञान, तथा गरिमापूर्ण जीवन-स्तर हेतु संसाधन; एचडीआई के जनक (UNDP, 1990)।
माइकल टोडारो (Michael Todaro)	विकास = गरीबी, असमानता व बेरोजगारी में कमी लाने वाली बहुआयामी प्रक्रिया; इसमें सामाजिक संरचना, दृष्टिकोण व संस्थाओं में बदलाव भी शामिल।
डडली सीयर्स (Dudley Seers, 1969)	विकास की सफलता 3 प्रश्नों से परखो — क्या गरीबी घटी? क्या बेरोजगारी घटी? क्या असमानता घटी? तीनों घटे तो विकास हुआ, अन्यथा नहीं — भले प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो जाए।

 **तालिका से क्या समझें:** तालिका में विकास की समझ का क्रमिक विस्तार दिखता है — आर्थर लुईस ने विकास को मुख्यतः "प्रति व्यक्ति उत्पादन" से जोड़ा, डडली सीयर्स ने गरीबी-बेरोजगारी-असमानता की कसौटी जोड़ी, टोडारो ने संस्थाओं व सामाजिक दृष्टिकोण को शामिल किया, और अमर्त्य सेन व महबूब उल हक ने विकास का केंद्र "मनुष्य की क्षमता और विकल्प" बना दिया। यही यात्रा आगे मानव विकास सूचकांक तक पहुँची।

पीछे की कहानी — डडली सीयर्स का "विकास का अर्थ" (1969)

ब्रिटिश अर्थशास्त्री डडली सीयर्स ने 1969 में नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय विकास समाज के विश्व सम्मेलन में "विकास का अर्थ" (The Meaning of Development) शीर्षक से लेख पढ़ा। उस समय दुनिया केवल जीडीपी वृद्धि को सफलता मानती थी; सीयर्स ने तर्क दिया कि यदि प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो जाए पर गरीबी, बेरोजगारी और असमानता न घटें, तो उसे विकास कहना "विचित्र" होगा। इसी लेख ने विकास की बहस को आय से हटाकर जन-कल्याण की ओर मोड़ा।

अमर्त्य सेन का "विकास स्वतंत्रता के रूप में" — विस्तार से

- ◆ **क्षमता उपागम (Capability Approach):** विकास का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों की **वास्तविक स्वतंत्रताओं (Real Freedoms)** का विस्तार करना तथा उनकी क्षमताओं का संवर्धन करना है — यानी व्यक्ति क्या "कर सकता है" और क्या "बन सकता है"।
- ◆ **अ-स्वतंत्रताओं (Unfreedoms) की समाप्ति:** गरीबी, भुखमरी, अवसरों का अभाव, सामाजिक वंचना एवं निरंकुशता को दूर करना अनिवार्य है, ताकि व्यक्ति अपनी इच्छित और मूल्यवान जीवनशैली चुन सके।

महबूब उल हक का "मानव विकल्पों का विस्तार" — विस्तार से

- ◆ **मानव-केंद्रित दृष्टिकोण:** विकास का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को केंद्र में रखना है, न कि केवल वस्तुओं एवं संपदा का उत्पादन बढ़ाना।
- ◆ **विकल्पों का विस्तार (Enlargement of Choices):** तीन अनिवार्य विकल्प — (1) दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन, (2) ज्ञान व शिक्षा, (3) गरिमापूर्ण जीवन-स्तर हेतु आजीविका तक पहुँच। यही तीन आगे चलकर एचडीआई के तीन आयाम बने।

“ "विकास को उन वास्तविक स्वतंत्रताओं के विस्तार की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है, जिनका लोग आनंद लेते हैं।" (Development can be seen as a process of expanding the real freedoms that people enjoy.)
(— अमर्त्य सेन, "स्वतंत्रता के रूप में विकास" (1999))

पीछे की कहानी — पुस्तक "स्वतंत्रता के रूप में विकास" (Development as Freedom, 1999)

अमर्त्य सेन ने बचपन में 1943 का बंगाल अकाल अपनी आँखों से देखा था, जिसमें लाखों लोग मरे जबकि बाज़ार में अनाज की भारी कमी नहीं थी। इसी अनुभव से उन्होंने सिद्ध किया कि भुखमरी अनाज की कमी से अधिक, लोगों की "खरीदने की क्षमता" छिनने से होती है। यह पुस्तक 1996 में विश्व बैंक में दिए उनके व्याख्यानों पर आधारित है; इसका प्रसिद्ध निष्कर्ष है कि सक्रिय लोकतंत्र और स्वतंत्र प्रेस वाले देश में बड़ा अकाल नहीं पड़ता।

📌 याद रखें — इस खंड के मुख्य बिंदु

1. आर्थिक विकास = वृद्धि + जीवन की गुणवत्ता में सुधार (शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता) — बहु-आयामी, गुणात्मक।
2. अमर्त्य सेन — "स्वतंत्रता के रूप में विकास" (1999); क्षमता दृष्टिकोण।
3. महबूब उल हक — विकास = लोगों के विकल्पों का विस्तार; पहली मानव विकास रिपोर्ट (1990)।

3. वृद्धि बनाम विकास — तुलना, संबंध, रोजगारहीन व समावेशी वृद्धि (Growth vs Development)

📈 आर्थिक वृद्धि (Growth)	🌱 आर्थिक विकास (Development)
◆ संकीर्ण अवधारणा — केवल जीडीपी/जीएनपी तक सीमित ◆ शुद्ध मात्रात्मक माप ◆ वितरण की उपेक्षा होती है ◆ अल्पकालिक भी हो सकती है ◆ बिना सचेत नीति के भी हो सकती है (जैसे तेल भंडार मिलना) ◆ संरचनात्मक परिवर्तन आवश्यक नहीं ◆ यह एक साधन (Means) है	◆ व्यापक अवधारणा — जीवन-स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य सभी शामिल ◆ गुणात्मक + मात्रात्मक दोनों माप ◆ न्यायसंगत वितरण अनिवार्य शर्त ◆ सदैव दीर्घकालिक प्रक्रिया ◆ सचेत नीति व योजना अनिवार्य ◆ संरचनात्मक बदलाव (कृषि → उद्योग → सेवा) अनिवार्य ◆ यह अंतिम साध्य (End/Goal) है

🔍 **बॉक्स से क्या समझें:** बॉक्स की अंतिम पंक्ति सबसे महत्वपूर्ण है — वृद्धि "साधन" (Means) है और विकास "साध्य" (End)। यानी आय बढ़ाना स्वयं लक्ष्य नहीं, बल्कि बेहतर जीवन पाने का रास्ता है। जो देश साधन को ही साध्य मान लेता है, वह ऊँची जीडीपी के बावजूद कुपोषण, बेरोज़गारी और प्रदूषण में उलझा रह सकता है।

वृद्धि और विकास — तुलनात्मक सारणी

तुलना का आधार	आर्थिक वृद्धि	आर्थिक विकास
अर्थ	वास्तविक जीडीपी / उत्पादन में वृद्धि	वृद्धि के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता में सुधार
प्रकृति	मात्रात्मक	मात्रात्मक + गुणात्मक
उद्देश्य	अधिक उत्पादन करना	बेहतर जीवन जीना
क्षेत्र	संकीर्ण	व्यापक
फोकस	उत्पादन एवं आय	मानव कल्याण
मापन के पैमाने	जीडीपी, जीवीए, जीएनपी, प्रति व्यक्ति आय	एचडीआई, एमपीआई, खुशहाली सूचकांक, एसडीजी सूचकांक, लैंगिक असमानता सूचकांक, शिशु व मातृ मृत्यु दर (IMR, MMR)
रोजगार	रोजगार सृजन के बिना भी संभव (रोजगारहीन वृद्धि)	उत्पादक रोजगार को बढ़ावा देता है
पर्यावरण	पर्यावरणीय लागत की उपेक्षा संभव	सतत विकास पर बल
संरचनात्मक परिवर्तन	केवल उत्पादन-क्षमता में वृद्धि दर्शाता है	संस्थागत, सामाजिक व तकनीकी संरचना में सकारात्मक बदलाव
सरोकार	उत्पादन के स्तर और गति से	उत्पादन के साथ न्यायसंगत वितरण एवं जीवन-स्तर से

🏏 क्रिकेट की भाषा में — स्कोरबोर्ड बनाम जीत

किसी टीम ने 350 रन बना लिए — यह "वृद्धि" है। पर अगर वे रन केवल एक बल्लेबाज़ ने बनाए, बाक़ी खिलाड़ी बिना मौक़े के बैठे रहे, और टीम फिर भी मैच हार गई — तो क्या यह सफलता है? **विकास** का अर्थ है कि टीम के हर खिलाड़ी को मौक़ा मिले, सबका प्रदर्शन सुधरे और टीम लंबे समय तक जीतती रहे। यही अंतर जीडीपी (स्कोर) और मानव विकास (पूरी टीम की ताक़त) में है।

💡 आज की भाषा में — वृद्धि बनाम विकास — एक सरल उदाहरण

किसी गाँव में एक बड़ी सीमेंट फैक्ट्री लगती है। उस गाँव की कुल आर्थिक गतिविधि तुरंत बढ़ जाती है — यह "आर्थिक वृद्धि" है। लेकिन अगर फैक्ट्री के प्रदूषण से गाँव का पानी दूषित हो जाए, मुनाफ़ा सिर्फ़ मालिक तक सीमित रहे, और मजदूरों की सेहत व बच्चों की शिक्षा में कोई सुधार न आए — तो यह सच्चा "आर्थिक विकास" नहीं है। असली विकास तभी होगा जब फैक्ट्री से स्थानीय रोज़गार मिले, मजदूरों के बच्चे स्कूल जाएँ, गाँव में अस्पताल बने और पर्यावरण को भी नुक़सान न हो।

क. "वृद्धि, विकास की आवश्यक शर्त है — पर पर्याप्त शर्त नहीं" — विश्लेषण

(i) वृद्धि "आवश्यक शर्त" क्यों है?

- ❖ **वित्तीय संसाधनों का सृजन:** ऊँची वृद्धि से राष्ट्रीय आय और सरकार का कर-राजस्व बढ़ता है।
- ❖ **सामाजिक अवसंरचना का वित्तपोषण:** अतिरिक्त संसाधनों से शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य, सुरक्षित पेयजल व पोषण पर सार्वजनिक व्यय बढ़ाया जा सकता है।
- ❖ **कल्याणकारी राज्य की क्षमता:** गरीबी उन्मूलन, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT), खाद्य सुरक्षा व सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लिए पर्याप्त धन चाहिए।
- ❖ **रोज़गार व निवेश के अवसर:** आर्थिक गतिविधियों के विस्तार से उद्योग व सेवा क्षेत्र में नए अवसर बनते हैं, क्रय-शक्ति बढ़ती है।

🔴 मुख्य तर्क

बिना आर्थिक वृद्धि के केवल पुनर्वितरण करने से "गरीबी का ही पुनर्वितरण (Redistribution of Poverty)" होगा — इसलिए वृद्धि एक अपरिहार्य व आवश्यक शर्त है। विकास बिना वृद्धि के लगभग असंभव है, क्योंकि विकास के लिए संसाधन चाहिए, जो वृद्धि से ही आते हैं।

(ii) वृद्धि "पर्याप्त शर्त" क्यों नहीं है?

- ❖ **आय व धन की बढ़ती असमानता:** यदि वृद्धि का लाभ केवल शीर्ष वर्ग तक सीमित रहे तो जीडीपी बढ़ने पर भी बहुसंख्यक आबादी गरीब बनी रहती है (कुज़नेट्स वक्र व ट्रिकल-डाउन सिद्धांत की विफलता इसके उदाहरण)।
- ❖ **रोज़गारहीन वृद्धि:** पूँजी-गहन उद्योगों पर आधारित वृद्धि से उत्पादन तो बढ़ता है, पर पर्याप्त रोज़गार नहीं बनते।
- ❖ **पर्यावरणीय क्षरण:** तीव्र वृद्धि प्रायः संसाधनों के अति-दोहन, प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन का कारण बनती है, जिससे भावी पीढ़ियों का जीवन-स्तर प्रभावित होता है।
- ❖ **सामाजिक संकेतकों की उपेक्षा:** कई देशों में ऊँची प्रति व्यक्ति आय के बावजूद बाल कुपोषण, मातृ मृत्यु दर व निरक्षरता ऊँची रहती है।
- ❖ **क्षेत्रीय विषमताएँ:** वृद्धि के केंद्र कुछ शहरी-औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित रह जाते हैं, ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में पिछड़ापन गहराता है।

ख. रोज़गारहीन वृद्धि (Jobless Growth)

परिभाषा: ऐसी आर्थिक स्थिति जिसमें जीडीपी तीव्र गति से बढ़ती है, किंतु उस अनुपात में नए रोज़गार के अवसर पैदा नहीं होते — परिणामस्वरूप वृद्धि के लाभ व्यापक कार्यबल तक नहीं पहुँचते। यह शब्द 1990 के दशक में प्रचलित हुआ (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की 1993 और 1996 की मानव विकास रिपोर्टों से लोकप्रिय हुआ)। भारत में यह प्रवृत्ति 1990 के बाद सूचना प्रौद्योगिकी/सेवा-आधारित वृद्धि में विशेष रूप से देखी गई।

💡 **क्या आप जानते हैं?** "तीव्र और अधिक समावेशी विकास" भारत की 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) का केंद्रीय विचार था।

आसान परिभाषा: रोज़गार लोच (Employment Elasticity)

परिभाषा: जीडीपी में 1% वृद्धि होने पर रोज़गार में होने वाली प्रतिशत वृद्धि: सूत्र — रोज़गार लोच = रोज़गार में प्रतिशत परिवर्तन ÷ जीडीपी में प्रतिशत परिवर्तन।

✓ **आसान भाषा में:** अर्थव्यवस्था बढ़ने पर नौकरियाँ कितनी तेज़ी से बढ़ती हैं — इसका माप। लोच कम है तो वृद्धि "रोज़गारहीन" कहलाती है। **उदाहरण:** जीडीपी 10% बढ़ी और रोज़गार केवल 2% — रोज़गार लोच 0.2; यानी उत्पादन तो बढ़ा, पर नई नौकरियाँ बहुत कम बनीं।

आर्थिक वृद्धि बनाम आर्थिक विकास



चित्र 1: आर्थिक वृद्धि बनाम आर्थिक विकास — मात्रा और गुणवत्ता

प्रमुख कारण एवं विशेषताएँ

- पूँजी-गहन तकनीक:** श्रम के स्थान पर स्वचालन (Automation) व आधुनिक पूँजी-गहन तकनीकों को प्राथमिकता।
- सेवा-आधारित वृद्धि:** आईटी व वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों का तेज़ विस्तार, जो अपेक्षाकृत कम श्रम-गहन हैं और उच्च-कुशल श्रम पर निर्भर हैं।
- कौशल अंतराल (Skill Gap):** उद्योग की माँग के अनुरूप युवाओं में आवश्यक कौशल की कमी।
- श्रम-गहन विनिर्माण का सीमित विस्तार:** कपड़ा, चमड़ा, खिलौने जैसे उद्योगों की धीमी वृद्धि — अकुशल व अर्ध-कुशल श्रमिकों के लिए अवसर सीमित।

ग. समावेशी विकास (Inclusive Growth)

परिभाषा: ऐसी आर्थिक वृद्धि जिसके लाभ समाज के सभी वर्गों — विशेषकर निर्धन, वंचित, महिलाओं और हाशिए के वर्गों — तक समान रूप से पहुँचें। यह केवल आय वृद्धि नहीं, बल्कि **अवसरों की समानता, गरीबी उन्मूलन और असमानता में कमी** सुनिश्चित करती है। यह भारत की **11वीं (2007-12)** पंचवर्षीय योजना का मूल विषय ("तीव्रतर एवं अधिक समावेशी वृद्धि") तथा **12वीं (2012-17)** योजना का विषय ("तीव्रतर, सतत एवं अधिक समावेशी वृद्धि" — Faster, Sustainable and More Inclusive Growth) था।

समावेशी विकास के घटक	क्या अर्थ है (उदाहरण सहित)
अवसरों की समानता	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और रोज़गार के समान अवसर।
मानव पूँजी का विकास	बुनियादी स्वास्थ्य, पोषण, पेयजल जैसी आधारभूत आवश्यकताओं की सार्वभौमिक उपलब्धता।
वित्तीय समावेशन	अंतिम व्यक्ति तक बैंकिंग, ऋण व बीमा की पहुँच (जैसे प्रधानमंत्री जन-धन योजना)।
सामाजिक सुरक्षा	वृद्धों, दिव्यांगों, महिलाओं और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए पेंशन व सुरक्षा जाल।
क्षेत्रीय संतुलन	पिछड़े व ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष बल देकर क्षेत्रीय विषमताएँ घटाना (जैसे आकांक्षी जिला कार्यक्रम)।

घ. ट्रिकल-डाउन सिद्धांत बनाम "नीचे से ऊपर" (Bottom-Up) दृष्टिकोण

ट्रिकल-डाउन सिद्धांत (Trickle-Down Theory): एक पारंपरिक दृष्टिकोण, जिसके अनुसार उच्च आय वर्ग, पूँजीपतियों व बड़े उद्योगों को कर-छूट, सब्सिडी व प्रोत्साहन देने से वृद्धि तेज़ होगी और उसका लाभ रोजगार व निवेश के माध्यम से स्वतः "रिसकर" (Trickle) सबसे निचले वर्ग तक पहुँच जाएगा।

पीछे की कहानी — "ट्रिकल-डाउन" शब्द कैसे बना?

अमेरिका की महामंदी के दौर (1932) में व्यंग्यकार विल रॉजर्स ने कहा था कि सरकार सारा पैसा ऊपर वालों को दे रही है, इस आशा में कि वह "रिसकर" (Trickle Down) ज़रूरतमंदों तक पहुँचेगा। तब से यह शब्द उस नीति के लिए प्रयोग होने लगा जिसमें अमीरों व बड़ी कंपनियों को कर-छूट देकर सबके भले की आशा की जाती है। 1980 के दशक में अमेरिका और ब्रिटेन में यह सोच प्रमुख रही, पर असमानता बढ़ने से इसकी आलोचना हुई।

व्यावहारिक असफलता के कारण

- ♦ **धन का संकेंद्रण:** प्रोत्साहनों से संपत्ति शीर्ष वर्ग में केंद्रित रही — आय असमानता बढ़ी।
- ♦ **रोजगारहीन वृद्धि:** पूँजी-सघन, स्वचालित तकनीकों के कारण बड़े पैमाने पर रोजगार नहीं बने।
- ♦ **उपभोग व माँग में कमी:** निचले वर्ग की आय न बढ़ने से व्यापक समग्र माँग (Aggregate Demand) पैदा नहीं हुई।
- ♦ **पूँजी का अनुत्पादक प्रवाह:** अतिरिक्त पूँजी उत्पादक क्षेत्रों के बजाय सट्टा बाज़ार, शेयर बाज़ार या विदेशी परिसंपत्तियों में चली गई।

"नीचे से ऊपर" (Bottom-Up) दृष्टिकोण की बढ़ती प्रासंगिकता

- ♦ **प्रत्यक्ष आर्थिक सशक्तिकरण:** जन-धन, आधार व मोबाइल की जैम त्रिमूर्ति से धन सीधे लाभार्थियों के खातों में — बिचौलियों व रिसाव (Leakage) की समस्या घटी।
- ♦ **माँग-संचालित वृद्धि:** निचले वर्ग की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) अधिक होती है; डीबीटी से उनकी क्रय-शक्ति बढ़ती है, बुनियादी वस्तुओं की माँग बढ़ती है और पूरा आर्थिक चक्र गतिमान होता है।
- ♦ **सामाजिक सुरक्षा व वित्तीय समावेशन:** पीएम-किसान, ग्रामीण रोज़गार गारंटी (2005 का मनरेगा, जिसका स्थान 2025 में "बीबी-जी राम जी" अधिनियम ने लिया), सामाजिक पेंशन से कमजोर वर्गों को आर्थिक संकटों से सुरक्षा व औपचारिक बैंकिंग से जुड़ाव।
- ♦ **मानव पूँजी पर जोर:** शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण को प्राथमिकता देकर वास्तविक समावेशी वृद्धि का मार्ग।

आसान परिभाषा: सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume — MPC)

परिभाषा: आय में होने वाली अतिरिक्त (सीमांत) वृद्धि का वह भाग जो उपभोग पर खर्च किया जाता है, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहलाता है। सूत्र: एमपीसी = उपभोग में परिवर्तन ÷ आय में परिवर्तन ($\Delta C / \Delta Y$)।

✓ **आसान भाषा में:** किसी को ₹100 ज़्यादा मिलें तो वह उसमें से कितना खर्च करेगा — यही एमपीसी है। गरीब परिवार लगभग पूरा पैसा ज़रूरतों पर खर्च कर देता है, अमीर उसका बड़ा हिस्सा बचा लेता है। 🏠 **उदाहरण:** एक मजदूर परिवार को ₹1,000 मिले और उसने ₹900 राशन-कपड़ों पर खर्च कर दिए तो उसका एमपीसी = 0.9; एक धनी परिवार ने उतने में से केवल ₹300 खर्च किए तो उसका एमपीसी = 0.3 — इसीलिए गरीबों तक सीधा पैसा पहुँचाना बाज़ार में माँग को तेज़ी से बढ़ाता है।

आसान परिभाषा: समग्र माँग (Aggregate Demand)

परिभाषा: एक निश्चित समय में अर्थव्यवस्था की सभी वस्तुओं-सेवाओं पर कुल नियोजित व्यय — परिवारों का उपभोग + निवेश + सरकारी व्यय + शुद्ध निर्यात।

✓ **आसान भाषा में:** पूरे देश में लोग, कंपनियाँ और सरकार मिलकर कुल कितना खरीदना चाहते हैं। 🏠 **उदाहरण:** त्योहार के मौसम में हर परिवार कपड़े, मिठाई, गाड़ियाँ खरीदता है — बाज़ार में कुल माँग उछल जाती है और कारखाने उत्पादन बढ़ाते हैं।